

शब्द-भेद (Kinds of words) —

हिन्दी के शब्दों का वर्गीकरण = 4 प्रकार से

हिन्दी शब्द के बितने भेद = 2

शब्द-भेद

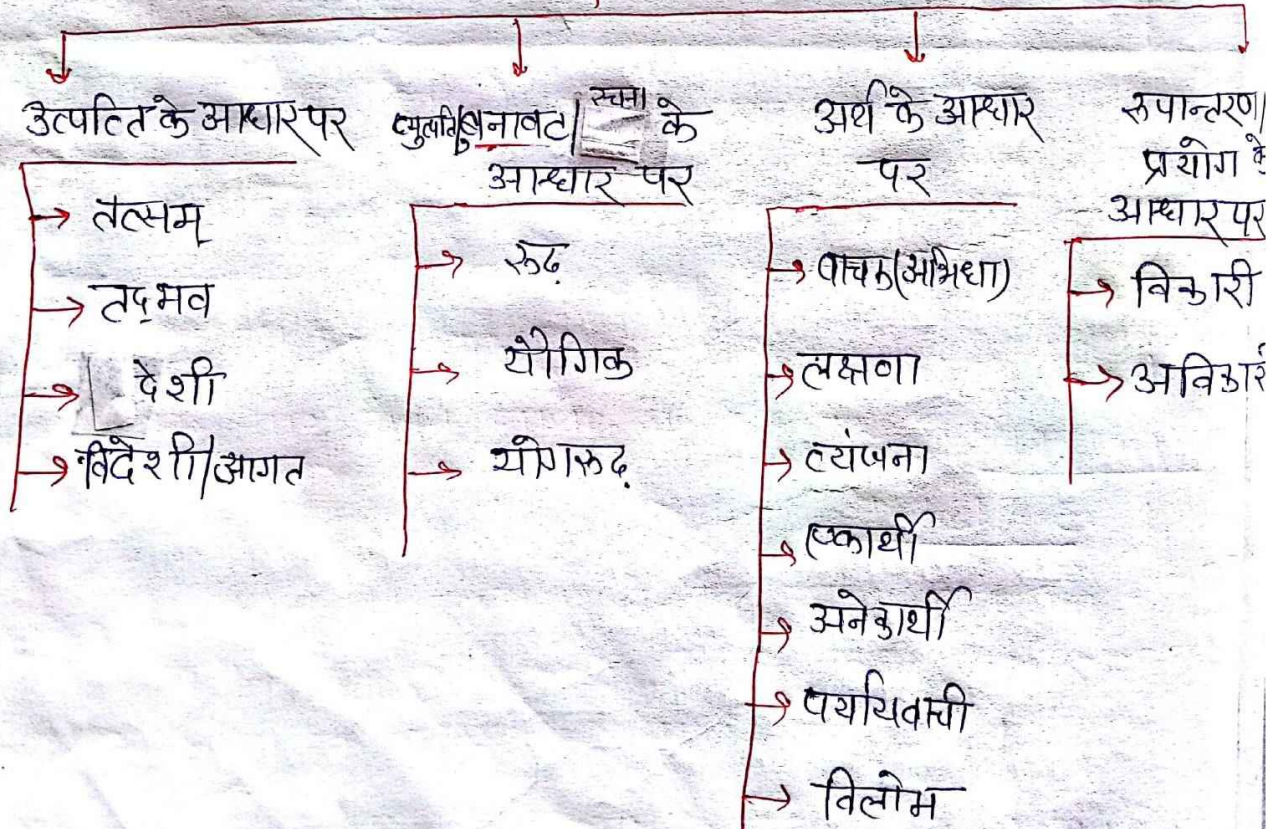
साधक

(जिन शब्दों का अर्थ हो → घर, नगर -)

निरर्थक

(जिन शब्दों का अर्थ न हो → फटाफट, टन, सन -)

हिन्दी शब्दों का वर्गीकरण



॥ उत्पत्ति के आधार पर →

- (a) तत्सम — संस्कृत के शब्दों का ज्यों का त्यों प्रयोग।
- (b) तद्भव — संस्कृत के शब्दों में थोड़ा हेर-फेर कर बने शब्द
- (c) देशी — देश में जन्मा (शब्द)
- (d) विदेशी — विदेश के शब्द का प्रयोग

॥ व्युत्पत्ति / बनावट के आधार पर →

१) रुद्ध → जिन शब्दों के तार्थिक छंड न हो, अर्थात् जो अन्य शब्दों के मेल से न बने हों।

⇒ धर, राम, चावल, दाल —

२) यौगिक → जो दो या दो से अधिक शब्दों के योग से बना हो।

⇒ विज्ञान (वि + ज्ञान), विद्यालय (विद्या + आलय) विद्यार्थी —

३) यौगलृ → कोई शब्द जो यौगिक तो हो, परन्तु जो सामान्य अर्थ न देकर कोई विशेष अर्थ दे।

⇒ पीताम्बर, लोहोदर, नीलकंठ, दशरथ —

Note → “बहुव्रीहि समास” के सारे उदाहरण

“यौगलृ” कहलाते हैं।

③ अर्थ के आधार पर →

① वाचक (अभिधा) → जिस शब्द का सीधा - सीधा अर्थ लिया जाए, अर्थात् जो शब्द का अर्थ है, वही समझा जाए।

⇒ घर, नगर, सड़क, राम मोहन - - -)

② लाक्षणिक (लक्षणा) → वे शब्द जिनका सीधा अर्थ न लेकर किसी कारण वश दूसरा अर्थ लिया जाए।

⇒ किसी मूर्ख को हम कहें कि — तुम निरे गद्दे हो, तो, यहाँ गद्दे शब्द का अर्थ जानवर न लेकर गद्दे के समान मूर्ख समझा जाता है। अर्थात् गद्दा शब्द यहाँ लक्षणा है।

③ व्यंजना → ऐसे शब्द जिनका न तो वाचक और न तो लक्षणा अर्थ लिया जाए। अर्थात् व्यंजना दोनों से भिन्न होता है।

⇒ कोई चोर अपने साथी से कहे कि, "रात कितनी अंधेरी है।"

तो यहाँ कहने का तात्पर्य है कि यहाँ रात की विशेषता नहीं बताई जा रही है, बल्कि कहा जा रहा है कि चोरी के लायक शानदार रात है।

Note ⇒ इन तीनों (व्यंजना, लक्षणा, वाचक) को ⁶शब्द की शक्ति भी कहते हैं।

अर्थात् इन्हें शब्द - शक्ति कहा जाता है।

कुछ अन्य भी हैं अर्थ के आधार पर →

- ग) ① लक्षार्थी — जिन शब्दों का केवल एक अर्थ हो।
ग) ② अनेकार्थी — जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ हों।
③ पर्यायवाची — जो समान अर्थ दें।
④ विपरीतार्थी — जो उल्टा / विपरीत अर्थ दें।

ध) ④ रूपान्तरण के आधार पर →

विकारी शब्द
(संज्ञा, लिंग, क्वन के आधार पर
पर मूल शब्द का रूपान्तरण हो)

विकारी शब्द के भेद —

- संज्ञा
- सर्वनाम
- क्रिया
- विशेषण

अविकारी शब्द
(संज्ञा, लिंग, क्वन, कारक के आधार पर परिवर्तन नहीं)

अविकारी शब्द के भेद —

- क्रिया विशेषण
- संबन्ध बोधक
- समुच्चय बोधक
- विस्मयादि बोधक

ये चारों अव्यय शब्द के
भेद कहलाते हैं।

अथर्व अव्यय शब्द अविकारी
ही होता है।

(i) विभारी शब्द : →

b)

(a) संज्ञा → किसी का भी एक स्थिर (नाम) → राम, कानपुर

संज्ञा के भेद

→ लुपति के आधार पर

- ① → रुद्र
- ② → यौगिक
- ③ → योगरूढ़

अर्थ की दृष्टि से

- ① → व्यक्तिवाचक → किसी वस्तु का नाम (राम, अश्वि, कानपुर, गंगा)
- ② → जातिवाचक → जाति का बोध (नदी, पर्वत, लड़की)
- ③ → द्रव्यवाचक → ऐसा पदार्थ जिससे वो वस्तु बनी हो (सोना, घी, धुआँ)
- ④ → समूहवाचक → समुदाय का बोध करवाए = सेना, सभ्यता, सभा
- ⑤ → भाववाचक → भाव, गुण, दशा का बोध हो - क्रोध, मिठास, कल्लिमा

(b) सर्वनाम → संज्ञाओं के बदले जो प्रयोग हो -
(मैं, मैंने, तुम, वह - -)

सर्वनाम के भेद -

सर्वनाम ६: प्रकार के होते।

1) पुरुषवाचक → जो (स्त्री/पुरुष) के नाम के बदले में आते ये भी तीन प्रकार के होते -

→ उत्तम पुं. - मैं, हम,

→ मध्यम पुं. - तुम, आप, तूने, तुझे, तुझकी - -

→ अन्य पुं. - वह, यह, वे, ये, इन, उन, उनसे - -

2) निश्चयवाचक → जो किसी वस्तु का निश्चयात्मक संकेत दे
⇒ यह साँप है। वह सायमा है।

3) अनिश्चयवाचक → किसी निश्चित वस्तु का बोधन हो
⇒ किसी को बुलाओ। धीमे से मिला है।

4) संबंधवाचक → दो वस्तुओं के बीच संबंध का बोध हो।
⇒ जो, सो

5) प्रश्नवाचक → जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध हो।
⇒ कौन, क्या, कहाँ, कैसे

6) निजवाचक → जिस सर्वनाम से कर्ता का बोध हो।
⇒ उसका

(C) विशेषण → संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बताने वाले को कहते।

* विशेषण और विशेष्य : —

जो शब्द विशेषता बताता — विशेषण

जिसकी विशेषता बताई जाए — विशेष्य

⇒ जोरी नेहा हंसती है।

↓ ↓
विशेषण विशेष्य

विशेषण के भेद : — चार प्रकार के होते —

* ① सार्वनामिक → जो सर्वमान शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त हो।
(सर्वव्यापक)

⇒ यह घर मेरा है। यह किताब फटी है।

* ② गुणवाचक → जो शब्द संज्ञा/सर्वनाम के गुण-धर्म, आकार, रंग, दशा — बोध कराये।
⇒ यह मेरी नयी कुर्ती है।

* ③ परिमाणवाचक → जो शब्द किसी वस्तु के परिमाण (तौल-माप) का बोध कराये।

* परिमाणवाचक के दो भेद —

→ निश्चित परिमाण वाचक — चार सैर दूध, दस किलो, 5 किंवदंत गेहूँ

→ अनिश्चित परिमाण वाचक — बहुत ही, थोड़ी, अस्थिर चीनी

4) संख्यावाचक → जिससे वस्तुओं की संख्या का बोध हो -

संख्यावाचक के 5 प्रकार -

1) गणनावचक - 1, 2, 3, 4, 5, 6 -

2) क्रमवचक - पहला, दूसरा, तीसरा -

3) आवृत्तिवचक - तिगुना, चौगुना, - - -

4) समुदायवचक - चारों, आठों, सातों -

5) प्रत्येकवचक - हर एक का बोध (प्रत्येक व्यक्ति, हर एक भाषी)

प्रविशेषण ⇒ जो शब्द विशेषणों की भी विशेषता बताए।

यह बहुत तेज दौड़ता। सीता अत्यन्त सुन्दर है।

विशेषण विशेष्य & विधेय विशेषण -

शब्द काला छोड़ा दौड़ा।

↓ ↓
विशेषण विशेष्य

मान जब विशेषण विशेष्य से पहले आए तो वहाँ विशेष्य-विशेषण होगा।

यह जगह सुनी जान पड़ती है।

↓ ↓
विशेष्य विशेषण

जब विशेषण विशेष्य के बाद आए तो वहाँ 'विधेय - विशेषण' होगा।

* विशेषण की अवस्था है — 3

(1) मूलावस्था : — उच्च , अधिक

(2) उत्तरावस्था : — उच्चतर , अधिकतर

(3) उत्तमावस्था : — उच्चतम , अधिकतम

(B) क्रिया : — जिस शब्द में किसी काम का करना पाया जाए ।

Ex — रश्मि दौड़ना पसंद करती है ।

* धातु : — जिस मूल शब्द से क्रिया बने ।

Ex — दौड़ , जा , खा — —

* धातु के भेद : — 2

(1) मूल धातु : — स्वतंत्र होती Ex — पढ़ , लिख , जा —

(2) यौगिक धातु : — प्रत्यय के योग से बनती Ex —
चलना से चला ।

प्रेरणार्थक क्रिया (धातु)

उठवाना ,
सुलवाना ,
सुलाना

[आना /
लाना
जोड़ा जाना]
धातु में

↳ क्रिया से पता चलने की
कला स्वयं न कार्य करते
किसी दूसरे से करने से
निवृत्ति करे ।

यौगिक क्रिया (धातु)

* दौ/दौ से अधिक
धातुओं के संयोग
से प्रत्यय लगाने
से बने ।

(चलना - चलाना)

सँधा

(रौना - रौना)

(चल देना)

नाम धातु

* जो धातु संज्ञा/
विशेषण से बने ।

* हाथ - हथियाना

* गर्म - गरमाना

* क्रिया के भेद

सकर्मक (रीता आम खाती है।)

अकर्मक (रीता खाती है।)

द्विकर्मक → संयुक्त
(श्वेता ने रीता को बाँसूरी दी।)

* जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़े — सकर्मक (प्रभु ने पर

* जिस क्रिया का फल काल '१' — अकर्मक (क्या 'माउ' मिला।)

* जिस वाक्य में दो क्रिया हों — द्विकर्मक

* कुछ अकर्मक / सकर्मक क्रिया भी ऐसी होती हैं, जो पूरा अर्थ न दें, उस अर्थ को पूरा करने के लिए जो शब्द जोड़े जाते, उन्हें उहते — पूरक

* व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया भेद: —

(1) मूल क्रिया (2) यौगिक क्रिया (3) पूर्वशालिउ क्रिया

* जो क्रिया दूसरे शब्दों से न बनी हो — मूल (मुख्य) क्रिया

↳ Ex — खाना, पीना, सोना

* मुख्य क्रिया के साथ जो क्रियाएँ आए — सहायक क्रिया

↳ Ex — था, है, हूँ —

* जिस क्रिया का सिद्ध होना किसी दूसरी क्रिया के सिद्ध होने के पहले नपाया जाए उसे उहते — पूर्व-कालिक क्रिया

Ex — मैं गया मत कर सीती है।

* क्रिया की 3 अवस्था होती हैं :-

- (1) सामान्य अवस्था
- (2) विधि अवस्था — { परोक्ष विधि (भविष्यकाल)
- (3) सम्भाव्य अवस्था } प्रत्यक्ष विधि (वर्तमानकाल)

* जिस क्रिया में विधान निश्चित हो — सामान्य अवस्था
Ex - अजय आया। राधा खेल रही है।

* जिस क्रिया से प्रार्थना, प्रश्न आदि का भाव प्रकट हो — विधि अवस्था

* हम यहाँ खेलें ? = प्रत्यक्ष विधि

* आप मुझे पुस्तक दीबिछा। = परोक्ष विधि

* जिस क्रिया से अनुमान, इच्छा, संदेह आदि का बोध हो — सम्भाव्य अवस्था

↳ Ex - शायद वह कानपुर में मिल जाय।

* अविकारी शब्द (अव्यय) *

* ये 4 प्रकार के होते हैं।

(1) क्रिया विशेषण अव्यय (Adverb) :- ऐसा शब्द जो क्रिया की विशेषता बताए।

* ये 4 प्रकार के होते हैं।

- (a) समय (काल) वाचक = "कब" का भाव Quickly (Jenallyy use होता)
 (b) मात्रा (पारिमाण) वाचक = "कितना" का भाव
 (c) स्थानवाचक = "कहाँ" का भाव
 (d) रीतिवाचक (काम करने का तरीका) = "कैसे" का भाव

Quickly - जिन वाक्यों "कहाँ" का भाव निम्नलिखित, वहाँ स्थानवाचक होता।

Ex = रमेश बहुत पढ़ता है। → मात्रावाचक (रमेश कितना पढ़ता)
 वह धीरे बोलता है। → रीतिवाचक (वह कैसे बोलता)
 बच्चे अंदर चले गए। → स्थानवाचक (वह कहाँ गए)
 वह प्रतिदिन व्यायाम करता है। → कालवाचक (वह कब करेगा)

(2) सम्बन्ध बोधक (Preposition) :- जो शब्द ^{सर्वनाम} संज्ञा/के वाप आकर उस ^{सर्वनाम} संज्ञा/से दिखाते हैं।
का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्द से दिखाते हैं।

Ex - * चौरव सेना समैत मारे गए।

* यह चोरी कुछ दिन पहले हुई।

* शाम के आगे राधा खड़ी है।

* मोहन के बिना मैं नहीं जाऊँगा।

(3) समुच्चय बोधक (Conjunction) :- दो वाक्यों को परस्पर जोड़ने वाली समुच्चय बोधक कहते हैं।

* यह दो प्रकार के होते हैं -

(i) संयोजक (किन्हीं दो वाक्यों को जोड़ना)

(ii) वियोजक (किन्हीं दो वाक्यों को तोड़ना)

Ex - हँस हँस और पानी को अलग कर देता है।

तुम बहुत मेहनती थी, लेकिन तुम सफल न हो सके।

(4) विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjection) :- हर्ष, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रकट करता है।

Ex - वाह ! क्या धक्का मारा है। (हर्ष)

औहो ! मजा आ गया। (हर्ष)

हाय ! यह क्या हो गया। (विषाद)

निपात :- वाक्य में किसी शब्द के बाद जो अव्यय लगाकर एक विशेष बल दे, निपात कहते हैं।

Ex- इस बात को एक मुखी भी जाना है।
राम ने ही मारा है।